P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-3* June - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महात्मा गाँधी और वर्तमान सामाजिक व्यवस्था

Mahatma Gandhi and the Current Social System

Paper Submission: 15/06/2020, Date of Acceptance: 28/06/2020, Date of Publication: 29/06/2020

विकास कुमार सरकार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
दर्शनशास्त्र विभाग,
सेंट एण्ड्रूज कालेज,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत और भारतीयता को अगर परिभाषित किया जाये तो महात्मा गाँधी के बिना उसका पूरा होना लगभग असम्भव सा होगा। महात्मा गाँधी के जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों में जीवन की सादगी, ईश्वर में दृढ़ आस्था, जनोन्मुख विचारधारा और स्वदेशी का प्रमुख स्थान था। शायद यही सारे गुणों ने ही गाँधी जी को आज के युग में भी प्रासंगिक बनाये रख है। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में गाँधी जी का दर्शन आज भी इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि आज का जनमानस उच्च कोटि के सिद्धान्तों को नकारने के अन्जाम से अच्छी तरह से वाकिफ हो चुका है और अच्छाई के बचे अवशेषों को भावी पीढ़ी के लिए किसी भी प्रकार से सुरक्षित करना चाहता है। गाँधी जी जिन मूल्यों को साथ लेकर चले, उसमे नैतिक साहस, सत्य निष्ठा, शारीरिक श्रम का सम्मान, कथनी–करनी की एकता, अत्याचार और अनाचार का सक्रिय प्रतिरोध, सर्वधर्म सम्भाव, अहिंसा आदि शामिल थें।

If India and Indianness are defined, it would be almost impossible to complete without Mahatma Gandhi. Simplicity of life, firm faith in God, people-oriented ideology and Swadeshi had a prominent place in important aspects of Mahatma Gandhi's life. Perhaps these same qualities have kept Gandhiji relevant even in today's era. Gandhi's philosophy is still relevant in the present social system because today's public is well aware of the denial of the principles of the highest order and wants to secure the remaining remnants of good for the future generation in any way. is. The values that Gandhiji carried with him included moral courage, true loyalty, respect for manual labor, unity of utterance, active resistance to tyranny and incest, Sarvadharma Sambhav, non-violence etc.

मुख्य शब्द : महात्मा गाँधी , सामाजिक व्यवस्था , सिद्धान्तों , नैतिक साहस।
Mahatma Gandhi, Social Order, Principles, Moral Courage.

प्रस्तावना

आत्मिक शक्ति का महत्व

बीसवीं सदी के महानतम व्यक्तियों में महात्मा गाँधी सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। गुणों में 'महानता' एक ऐसा गुण होता है जो कि जन्मजात नहीं होता बल्कि उसे अर्जित करना पड़ता है। गाँधी जी ने भी इस गुण का अर्जन अपनी प्रयोगशीलता, संघर्षशीलता और अपनी विद्रोही प्रवृत्ति के द्वारा किया था। प्रयोग करना तो जैसे उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया था। अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में अंतिम क्षणों तक उन्होंने कई प्रयोग किये। अपनी आत्मकथा का शीर्षक 'सत्य के प्रयोग' उन्होंने अकारण ही नहीं रखा था। उन्होंने बीसवीं शताब्दी के पूंजीवादी–उपनिवेशवादी साम्राज्यवाद के प्रति विद्रोह किया और उसके साथ संघर्ष करके भी दिखाया, वो भी बिना हथियारों के। और भारत के अनेक उपनिवेश बने देशों को भी स्वाधीनता का रास्ता दिखाया जिस पर चलकर अनेक पराधीन देशों ने स्वाधीनता प्राप्त की। प्रश्न है कि यह सब सम्भव कैसे हुआ? क्योंकि शारीरिक दृष्टि से तो गाँधी जी कोई बहुत शक्तिशाली व्यक्ति नहीं थे। आम बोलचाल की भाषा में 'डेढ़ पसली' के आदमी थें। असल में गाँधी जी की असली शक्ति उनकी मानसिक – आत्मिक शक्ति थी। इस शक्ति का कुछ अनुमान उनके सम्बन्ध में डॉ0 रामविलास शर्मा के इस कथन से लगाया जा सकता है– श्उनकी इच्छाशक्ति अद्भुत थी। कोई साथ न आये तो मैं अकेला लड़ूँगा – यह बात उन्होंने अनेक बार कही। राजनीति के दांव–पेंच में कभी–कभी वे अकेले पड़ जाते थें, समाधान के लिए सीधे जनता के पास पहुँचते थें। ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति देखकर वह आतंकित नहीं हुए। अकेले पड़ने पर

वह निराश नहीं हुए। एक बार उनके मन में कोई विचार आ जाये और उन्हें लगे, यह सही है तो उसे अमल में लाने के लिए वह सारी शक्ति लगा देते थें।''[1]

अध्ययन का उद्देश्य

गाँधी जी के राजनैतिक विचार सामान्य राजनैतिक विचारों से मूलतः भिन्न है। गाँधी जी इस तथ्य को स्वीकारनें में कभी भी नहीं हिचकिचाते थें कि उनके प्रत्येक कार्य में धर्म का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। बल्कि वे इसे सहर्ष स्वीकार भी करते थें। महात्मा गांधी मॉ के काफी नजदीक होने के कारण उनके व्यक्तिव पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा।मॉ धार्मिक प्रवृति की थी और वैष्णव धर्म के मानने वाले थी जिन्होंने गांधीजी को बचपन से ही सत्य व अहिंसा की शिक्षा दी थी। विश्व के महानतम व्यक्तियों में महात्मा गाँधी महत्वपूर्ण स्थान रखते थे।

गाँधी जी जिन मूल्यों को साथ लेकर चले, उसमे नैतिक साहस, सत्य निष्ठा, शारीरिक श्रम का सम्मान, कथनी–करनी की एकता, अत्याचार और अनाचार का सक्रिय प्रतिरोध, सर्वधर्म सम्भाव, अहिंसा आदि शामिल थें। गांधी जी एक व्यक्तिव नही अपितु एक विचारधारा है जिसमें राजनैतिक और धार्मिक उलझी समस्याओं को दिशा प्रदान करने की शक्ति है।

आज़ाद भारत में गाँधी जी

अपनी मानसिक आत्मिक शक्ति से गाँधी जी ने भारत को स्वाधीनता तो दिलवा दी लेकिन देश के स्वाधीन होते ही वे अपने आदर्शों, विचारों से अकेले पड़ गयें। सत्ता जिनको मिली और जो सत्ता को पाने से वंचित रह गये, दोनों ही पक्षों को अब गाँधी जी और गाँधीवाद आप्रसंगिक लगने लगे। जिन सिद्धान्तों ने अंग्रेजों को भारत से जाने पर मजबूर कर दिया था, उन्ही सिद्धान्तों और कार्यक्रमों के बारे में कहा जाने लगा कि उनका व्यवहार में लाना ठीक नहीं है। आज़ाद भारत में गाँधी जी श्रद्धेय तो थे परन्तु व्यावहार्य नहीं थे। और शायद यही आज़ाद भारत की सबसे बड़ी भूल थी। क्या सचमुच स्थितियाँ इतनी बदल गयी थी? क्या सचमुच गाँधी जी सिद्धान्त और कार्यक्रम अब व्यवहारिक नहीं रह गये थें? मेरे विचार से यह कतई सच नहीं था।

सारे विचारों को छोड़कर अगर गाँधी जी के सिर्फ राजनैतिक विचारों के स्वरूप की ही चर्चा की जाये तो अन्त में यह मानना ही पड़ेगा कि उनका यह विचार भी अपने आप में अनूठा था।

राजनैतिक विचार का स्वरूप

गाँधी जी के राजनैतिक विचार सामान्य राजनैतिक विचारों से मूलतः भिन्न है क्योंकि वे राजनीति को भी धर्म एवं नैतिकता का अनुगामी बना देते हैं। गाँधी जी पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता था कि वो धर्म को राजनीति से जोड़ देते थें, परन्तु जो यह आरोप लगाते थें गाँधी जी उनको अपने धर्म के अर्थ से अनभिज्ञ मानते थें। वे कहते थें, ''सत्य के प्रति मेरी भक्ति ने मुझे राजनीति के क्षेत्र में ला खड़ा किया है और मैं बिना किसी हिचक के, किन्तु परम विनम्रता के साथ, यह कहना चाहता हूँ कि जो लोग यह कहते हैं कि धर्म का राजनीति से कोई वास्ता नहीं है, वे धर्म का अर्थ नहीं जानते।''[2]

गाँधी जी ऐसे लोगों के लिए अपने धर्म के अर्थ की व्याख्या करते हैं। एक ब्रिटिश पत्रिका के इस आरोप, की गाँधी जी राजनीति में धर्म को सम्मिलित करते हैं, गाँधी जी 1920 में लिखते है, "Let me explain what I mean by religion. It is not the Hindu religion, which i certainly prize above all other religions, but the religion, which transcends Hinduism which changes one's very nature, which binds one indissolubly to the truth within and whichever purifies. It is he permanent element in human nature which .....leaves the soul restless until it has found itself."[3] गाँधी जी राजनीति में धर्म की अनिवार्यता किस हद तक ज़रूरी मानते थें, यह इस वक्तव्य से पूर्ण रूप से प्रदर्शित होता है। उनके अनुसार, ''मेरी दृष्टि में धर्म से वंचित राजनीति केवल गन्दगी है, जो सर्वथा त्याज्य है। राजनीति का सरोकार राष्ट्रों से है और जिस चीज़ का सरोकार राष्ट्रों के कल्याण से हो, वह धार्मिक प्रवृत्ति वाले अर्थात ईश्वर और सत्य की खोज करने वाले व्यक्ति के सरोकार की चीज़ अवश्य होनी चाहिये। मेरी दृष्टि में, ईश्वर और सत्य एक दूसरे के पर्याय हैं और यदि कोई मुझे समझा दे कि ईश्वर असत्य और यन्त्रणा का ईश्वर है तो मैं उसकी आराधना करने से इन्कार कर दूँगा। इसलिए राजनीति में भी स्वर्ग के साम्राज्य की स्थापना करनी है।''[4]

सामान्य धारणा है कि राजनीति चतुर व्यक्तियों का खेल है। परन्तु गाँधी जी उसमें नैतिकता एवं धर्म को इस कदर समाहित करते थें कि एक बार बाल गंगाधर तिलक, जो गाँधी जी के महान समकालिक थें, ने सन् 1918 में गाँधी जी से कहा, ''राजनीति साधुओं के लिए नहीं है।''[5]

गाँधी जी इस तथ्य को स्वीकारनें में कभी भी नहीं हिचकिचाते थें कि उनके प्रत्येक कार्य में धर्म का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। बल्कि वे इसे सहर्ष स्वीकार भी करते थें। ''मैं धर्म के बिना एक पल नहीं रह सकता। मेरे बहुत से राजनीतिक मित्र मुझसे निराश हैं, क्योंकि उनका कहना है कि मेरी राजनीति भी धर्म से व्युत्पन्न है और वे ठीक कहते है। मेरी राजनीति और मेरे अन्य सभी कार्यकलाप मेरे धर्म से व्युत्पन्न हैं।''[6] यदि राजनीति में दक्षता से झूठ बोलकर, धोखाधड़ी या बेईमानी से सफलता प्राप्त की जाती है तो उसे भी यह कहकर मान्यता दी जाती है कि राजनीति में सबकुछ चलता है। गाँधी जी को यह मान्य नहीं था। वे कहते थें, ''मैं राजनीति को अपने जीवन की गहनतम बातों से पृथक नहीं कर सकता जिसका सीधा–सादा कारण यह है कि मेरी राजनीति भ्रष्ट नहीं है और वह अहिंसा तथा सत्य के साथ अटूट बन्धन में बन्धी है।''[7]

गाँधी जी राजनीति को भी नैतिक आधार देने का प्रयत्न करते थें, क्योंकि उनकी मान्यता थी की राजनैतिक कार्य प्रणाली को भी जगत तथा जीवन के अध्यात्मिक स्वरूप के अनुरूप ही होना चाहिये। यही कारण था कि उनके राजनैतिक विचार भी उनके धार्मिक तथा नैतिकता–विचार के पूर्णतया अनुरूप हैं। गाँधी जी राजनीति को समाज कल्याण का एक महत्वपूर्ण माध्यम मानते थें। परन्तु साथ ही वो राजनीति में आने की विवशता कुछ इस प्रकार ज़ाहिर करते थें। उनके शब्दों में,

''मुझे राजनीति के क्षेत्र में विवश होकर उतरना पड़ा, क्योंकि मैंने देखा कि राजनीति का स्पर्श किये बगैर मैं सामाजिक कार्य भी नहीं कर सकता था। मैं अनुभव करता हूँ कि राजनीतिक कार्य को सामाजिक और नैतिक प्रगति के अर्थ में लिया जाना चाहिये। लोकतन्त्र में जीवन का कोई पक्ष राजनीति से अछूता नहीं है।''[8]

गाँधी जी के अनुसार सभी मनुष्य समान हैं तथा हर मनुष्य के अन्दर में शुभत्व का वास है। अतः राजनैतिक जीवन की शुद्धता भी इसी बात पर आधृत है कि राजनैतिक जीवन में घृणा, अविश्वास, अनैतिकता तथा हिंसा का स्थान न रहे। गाँधी जी के लिए ष्सत्याग्रहष उनका राजनीतिक ढ़ंग भी था। कह सकते हैं कि गाँधी जी राजनीति का साधारण अर्थ न ग्रहण करते थें और न ग्रहण कर सकते थें। क्योंकि सत्याग्रह, सामाजिक एवं राजनैतिक उत्पीड़न के खिलाफ उनके द्वारा विकसित किया गया एक प्रकार का संघर्ष, नैतिकता में ही रोपित किया गया था। वे कहते थें, श्सत्य और अहिंसा के योग से, तुम सारी दुनिया को अपने कदमों में गिरा सकते हो। सार रूप में, सत्याग्रह और कुछ नहीं बल्कि राजनीति यानि राष्ट्रीय जीवन में सत्य और शालीनता की प्रतिष्ठा है।''[9]

निष्कर्ष

गाँधी जी के सत्याग्रह का बुनियादी सिद्धान्त था कि मनुष्य चाहे कितना ही स्वार्थान्ध हो जाये और कितने ही घातक या कुटिल उपायों से काम लेने को तैयार क्यों न हो गया हो, फिर भी उसके अन्तः स्थल में, सत्य ही सर्वोपरी है। यह प्रतीति और इसलिए उसके प्रति आदर व भय बना ही रहता है। मनुष्य मात्र के हृदय में स्थित सत्य–विषयक् यह गुप्त निश्चय आदर और भय – यही सत्याग्रह शास्त्र की बुनियाद है। इसी को मनुष्य के हृदय में रहने वाली ष्अन्तः करण की आवाज़ष कह सकते हैं। अतः इस प्रकार हम देखते हैं कि अपने राजनैतिक जीवन में भी गाँधी जी यह प्रयोग करते रहें और साथ ही इस बात का स्पष्ट निर्देश देते रहें कि घृणा तथा हिंसा को भी प्रेम, त्याग तथा आत्म बलिदान से जीता जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गाँधी, अम्बेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ/डॉ0 रामविलास शर्मा/पृ0 431*
2. *सत्य के प्रयोग, पृ0 370–371*
3. *Indian Horizon, Vol 43, No. 4, 1994, Pg. 141*
4. *यंग इण्डिय, 18/6/1925, पृ0 214*
5. *Indian Horizon, Vol 43, No. 4, 1994, Pg. 142*
6. *हरिजन, 2/3/1934, पृ0 23*
7. *यंग इण्डिय, 01/10/1931, पृ0 281*
8. *हरिजन, 6/10/1946, पृ0 34*
9. *यंग इण्डिय, 10/03/1920, पृ0 3*